अमिट रहेगी शहीद मेजर अमित की कुर्बानी

❐ ज्योति सूर्यवंशी

छाया : विनायक (देवू) सूर्यवंशी, अमरवाड़ा

उन्नीस जुलाई, 1982 को जन्मे शहीद मेजर अमित ठेंगे की शहादत मंगलवार 13 जुलाई, 2010 ने छिंदवाड़ा में एक ऐसी मनोरम इकाई की रुचना की जिसे वाकई में भारत कहा गया। ऐसा करिश्माई जज्बा शहीद के प्रति छिंदवाड़ावासियों में शहीद की एक झलक पाने की ललक, उत्कंठा और उमंग तथा जिसने दिखा दिया कि देश पर लहू बहाने वाले वतन पर कुर्बान होने वाले की न कोई जाति होती है, न कोई धर्म होता है, न कोई सम्प्रदाय, न कोई भाषा। अमित तो सिर्फ अमरत्व को प्राप्त हुआ। जीवन सदा के लिए जीता हुआ ऐसा व्यक्तित्व था, जिसको छूकर माथे पर चन्दन बनाकर ध्येय पथ पर अग्रसर होने की, उसे समझने, जानने और पहचानने की हर किसी को उत्कंठा थी। हर गली, हर कूचा अमित की गौरवशाली दास्तान को बयान कर रहा है। मेजर शहीद अमित की चिता से निकली एक-एक चिंगारी को हृदय में धारण करते हुए मेजर अमित अमर रहें से गुंजायमान 50-60 हजार का जनसमूह।

दोनों छायाचित्र : मोहन साहू, छिंदवाड़ा

शहीद मेजर अमित 28 साल का जाँबाज सिपाही जो सहज, सरल और मिलनसार था और जिसने चार वर्ष पूर्व ही 2006 में सेना के कम्यूनिकेशन इकाई को ज्वाइन किया था। अमित को उनकी लगन, कड़ी मेहनत और निष्ठा के चलते मेजर के रूप में पदोन्नति मिली और जम्मू के मेंढर में देश की रक्षा के लिए तैनात किए गए थे। जम्मू के मेंढर से मीडिया के हवाले से मिली खबर के अनुसार पाकिस्तानी आतंकी के घुसपैठ की खबर सेना को मिली थी। हवाई सर्वे कराने के बाद मंगलवार 13 जुलाई, 2010 को सेना को घेराबंदी के लिए भेजा गया था। मेजर अमित 37 राष्ट्रीय रायफल्स भी सरहद और वतन की सुरक्षा के लिए उस घेराबन्दी में शामिल थे। बचपन का देश भक्ति का जज्बा परवान चढ़ा और जम्मू के मेंढर के जंगल में 15 आतंकी और कमाण्डरों के बीच घायल होते हुए भी अपना परचम लहराया और दो आतंकी को ढेर कर गया।

(लेखिका सहा. प्राध्यापक समाजशास्त्र, शा.महा.वि. अमरवाड़ा हैं।)